

श्रीमद्भागवतम् स्कन्ध 4 अध्याय 10: उत्तम की मृत्यु व यक्ष

21 September 2026

🙏 पाठ से पहले एक निवेदन

श्रीमद्भागवत महापुराण के ये अध्यायवार सार गीता प्रेस भागवत को मुख्य आधार मानकर तैयार किए गए हैं। ये भागवत के अध्ययन में सहायक हैं, मूल ग्रंथ का स्थान नहीं ले सकते।

अध्ययन का मुख्य और अनुशंसित मार्ग गीता प्रेस की भागवत पुस्तक से सीधा पाठ है। यात्रा में, घर से दूर, या जब पुस्तक पास न हो, तब निरंतर अध्ययन, पुनरावृत्ति और समझ के लिए इन सारों का सहारा लिया जा सकता है।



मुख पर शोक तथा दृढ़ संकल्प लिए, युवा राजा ध्रुव अपने विजयी रथ पर आरूढ़ होकर यक्षों की हिमालयी नगरी की ओर बढ़ता है, अपने प्रिय भाई की हत्या का उत्तर देने।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम में आपका स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पावन कथाओं और शिक्षाओं की एक भक्तिपूर्ण यात्रा। भगवान् के दर्शन तथा अविनाशी वरदान को पाकर, ध्रुव घर लौटा, राजा के रूप में अभिषिक्त हुआ, और धर्मपूर्वक शासन किया। यह दशम अध्याय कृपा से शोक की ओर मुड़ता है। ध्रुव का छोटा भाई उत्तम, जो अब भी अविवाहित था, हिमालय में आखेट करते समय एक यक्ष द्वारा मारा जाता है, और

उसकी माता सुरुचि उसे खोजते हुए प्राण त्याग देती है। शोक तथा क्रोध से अभिभूत होकर, ध्रुव अपने भाई का प्रतिकार करने रथ पर आरूढ़ होकर यक्षों की नगरी पर चढ़ाई करता है; वह उनके द्वार पर अपना शंख बजाता है, और एक भीषण युद्ध आरम्भ होता है। फिर भी यहाँ, बाणों तथा माया के बीच, अध्याय अपना भक्तिपूर्ण हृदय बनाए रखता है, इस रूप में समाप्त होते हुए कि महर्षि प्रकट होकर युवा राजा को भगवान् के नाम से आशीर्वाद देते हैं। यह शोक, धर्मयुक्त क्रोध, तथा उस रक्षा का अध्याय है जो पवित्र नाम रणभूमि पर भी प्रदान करता है।

अध्याय की जानकारी

- शास्त्र: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 4 (चतुर्थ स्कन्ध)
- अध्याय: 10 (दशम अध्याय)
- अध्याय का शीर्षक: उत्तम की मृत्यु तथा ध्रुव का यक्षों पर आक्रमण
- मुख्य वक्ता: महर्षि मैत्रेय, विदुर को अपने उपदेश की निरन्तरता में (जिसमें ऋषियों के वचन उद्धृत हैं)
- मुख्य श्रोता: विदुर
- मुख्य स्थल: ध्रुव का राज्य, तथा हिमालय की वह घाटी जहाँ यक्षों की नगरी अलकापुरी स्थित है
- केन्द्रीय विषय: उत्तम की मृत्यु, ध्रुव का शोक तथा आक्रमण, उसके शंख का बजना, तथा यक्षों से युद्ध
- मुख्य श्लोक-सीमा: स्कन्ध 4, अध्याय 10, श्लोक 1-30
- मूल संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण

पिछले अध्याय का सन्दर्भ

अध्याय 9 ध्रुव की तपस्या का प्रतिफल था: भगवान् उसके समक्ष प्रकट हुए, शंख से उसके गाल का स्पर्श कर उसकी स्तुति खोली, सप्तर्षियों से ऊपर एक अविनाशी धाम दिया, और ध्रुव पश्चात्तापी पिता के पास घर लौटकर राजा के रूप में अभिषिक्त हुआ। मैत्रेय संक्षेप में बताते हैं कि ध्रुव ने विवाह किया, पुत्र हुए, और भली प्रकार शासन किया; और फिर कथा उस शोक की ओर मुड़ती है जो उसके घर पर आया।

उत्तम की मृत्यु

ध्रुव का छोटा भाई उत्तम, सुरुचि का पुत्र और अब भी अविवाहित, एक दिन हिमालय में आखेट को गया। वहाँ वह एक बलवान् यक्ष द्वारा मारा गया। उसकी माता सुरुचि, जिसने कभी इतने अभिमान से वचन कहे थे, अपने खोए पुत्र की खोज में उन्हीं पर्वतों में निकल पड़ी, और वहाँ उसने भी अपना अन्त पाया।

उत्तमस्त्वकृतोद्वाहो मृगयायां बलीयसा ।

हतः पुण्यजनेनाद्रौ तन्मातास्य गतिं गता ॥ ३ ॥

uttamas tv akṛtodvāho mṛgayāyām baliyasā hataḥ puṇya-janenādrau tan-mātāsya gatim gatā

अर्थ: उत्तम, जो अब भी अविवाहित था, आखेट को गया और पर्वतों में एक बलवान् यक्ष द्वारा मारा गया; और उसे खोजती हुई उसकी माता सुरुचि ने भी वही गति पाई। (स्कन्ध 4, अध्याय 10, श्लोक 3)



युवा राजा ध्रुव तक यह समाचार पहुँचता है कि उसका भाई उत्तम हिमालय में एक यक्ष द्वारा मारा गया है, और उसके हृदय में शोक तथा क्रोध एक साथ उठते हैं (श्लोक 3-4)।

ध्रुव भाई का प्रतिकार करने चढ़ाई करता है

जब उसके भाई की हत्या का समाचार उस तक पहुँचा, ध्रुव शोक तथा क्रोध से एक साथ बिंध गया। अपने विजयी रथ पर आरूढ़ होकर, वह हिमालय की घाटी में यक्षों के धाम अलकापुरी की ओर चल पड़ा — वह नगरी जिसकी रक्षा भगवान् शिव के अनुचर करते थे।

ध्रुवो भ्रातृवधं श्रुत्वा कोपामर्षशुचापितः ।

जैत्रं स्यन्दनमास्थाय गतः पुण्यजनालयम् ॥ ४ ॥

dhruvo bhrātṛ-vadhaṁ śrutvā kopāmarṣa-śucārpitaḥ jaitraṁ syandanam āsthāya gataḥ puṇya-janālayam

अर्थ: अपने भाई की हत्या सुनकर, ध्रुव, शोक तथा क्रोध से अभिभूत होकर, अपने विजयी रथ पर आरूढ़ हुआ और यक्षों की नगरी को गया। (स्कन्ध 4, अध्याय 10, श्लोक 4)

यह चकित करने वाला लग सकता है कि जिस आत्मा ने भगवान् का साक्षात् रूप देखा हो, वह अब भी शोक तथा क्रोध से जल रही हो। किन्तु ध्रुव कभी केवल एकान्तवासी तपस्वी नहीं था; भगवान् ने उसे सिंहासन पर बिठाया था, और एक राजा के लिए भक्ति उसी कर्तव्य से जीवन्त होती है जिसमें वह अपने परिवार तथा प्रजा को उन लोगों से बचाए जो उन्हें हानि पहुँचाएँ। अतः उसका शोक तथा क्रोध शरणागति से विचलन नहीं, अपितु राजधर्म के माध्यम से उसी शरणागति का स्वाभाविक कार्यरूप है। अध्याय यहीं नहीं रुकता, तथापि: जब आगे चलकर ध्रुव का अपना धनुष यक्षों की माया के समक्ष असमर्थ हो जाता है, तब ऋषि उसे स्मरण कराते हैं कि उसका सच्चा बल कभी उसकी भुजा नहीं, अपितु भगवान् का नाम ही था — जिससे धर्मयुक्त कर्म अन्ततः पुनः शरणागति की ओर ही लौट आता है (श्लोक 4, 28-30)।

नगरी पहुँचकर, महाबाहु ध्रुव ने अपना शंख बजाया, और उसकी ध्वनि आकाश तथा समस्त दिशाओं में गूँज उठी, जिससे यक्षों की पत्नियाँ भय से व्याकुल हो उठीं।

दध्मौ शङ्खं बृहद्बाहुः खं दिशश्चानुनादयन् ।

येनोद्विग्नदृशः क्षत्तरुपदेव्योऽत्रसन्भृशम् ॥ ६ ॥

dadhmau śaṅkhaṁ bṛhad-bāhuḥ khaṁ diśāś cānunādayan yenodvigna-dṛśaḥ kṣattar upadevyo 'trasan bhṛśam

अर्थ: महाबाहु ध्रुव ने अपना शंख बजाया, आकाश तथा दिशाओं को गुँजाते हुए, जिससे यक्षों की पत्नियाँ, भय से नेत्र फैलाए, अत्यन्त भयभीत हो उठीं। (स्कन्ध 4, अध्याय 10, श्लोक 6)



हिमालयी घाटी में यक्षों की नगरी अलकापुरी के द्वार पर, महाबाहु ध्रुव अपना शंख बजाता है, जिसकी ध्वनि आकाश तथा प्रत्येक दिशा में गूँज उठती है (श्लोक 5-6)।

युद्ध का आरम्भ

इस ललकार से उत्तेजित होकर, यक्ष योद्धा अपनी नगरी से निकल पड़े और चारों ओर से ध्रुव पर अस्त्रों की वर्षा करते हुए उस पर टूट पड़े। एक क्षण के लिए युवा राजा बाणों तथा शस्त्रों की निरन्तर वर्षा से इतना ढँक गया कि दिखाई ही न देता था — जैसे कोई पर्वत मूसलधार वर्षा से ढँक जाता है।

औत्तानपादिः स तदा शस्त्रवर्षेण भूरिणा ।

न एवादृश्यताच्छन्न आसारेण यथा गिरिः ॥ १३ ॥

auttānapāḍiḥ sa tadā śastra-varṣeṇa bhūriṇā na evāḍṛśyatācchanna āsāreṇa yathā giriḥ

अर्थ: तब उत्तानपाद-पुत्र ध्रुव अस्त्रों की सघन वर्षा से इस प्रकार आवृत हो गया कि वह लेशमात्र भी दिखाई नहीं पड़ता था, मानो कोई पर्वत घनघोर वर्षा में विलीन हो गया हो। (स्कन्ध 4, अध्याय 10, श्लोक 13)

किन्तु युवा राजा अटल रहा। अपना धनुष खींचकर, उसने ऐसे तीक्ष्ण बाण छोड़े जो राक्षसों के कवचों तथा शरीरों को वेध गए, जैसे स्वर्ग के वज्र पर्वतों को चीर देते हैं।

तस्य ते चापनिर्मुक्ता भित्त्वा वर्माणि रक्षसाम् ।
कायानाविविशुस्तिग्मा गिरीनशनयो यथा ॥ १७ ॥

tasya te cāpa-nirmuktā bhittvā varmāṇi rakṣasām kāyān āviviśus tigmā girīn aśanayo yathā

अर्थ: उसके धनुष से छूटे तीक्ष्ण बाण राक्षसों के कवचों तथा शरीरों को वेध गए, जैसे वज्र पर्वतों को चीर देते हैं। (स्कन्ध 4, अध्याय 10, श्लोक 17)



यद्यपि एक क्षण के लिए वर्षा में पर्वत की भाँति अस्त्रों से ढँका, अटल ध्रुव अपना धनुष खींचता है, और उसके बाण यक्षों की पंक्तियों पर अचूक चलते हैं (श्लोक 13-17)।

किन्तु यक्षों का प्रतिरोध केवल लोहे तथा बाणों का नहीं था। जब ध्रुव मौन नगरी की ओर देखकर सोच रहा था कि उसके मायावी शत्रु और कौन-सी चाल छिपाए बैठे हैं, तभी मानो सम्पूर्ण सागर आकाश में उठ आया हो, ऐसा भीषण घोष उठा, और चारों दिशाओं से एक घूर्णित धूल-आँधी उस पर आ पड़ी। क्षणभर में आकाश घने बादलों से छा गया, बिजली कड़की, और जहाँ स्वच्छ वर्षा होनी चाहिए थी वहाँ एक अपवित्र वर्षा गिरने लगी; उसके पश्चात् शिलाखण्ड तथा ओले बरसे, फिर अग्नि उगलते सर्प, उन्मत्त गजराज, सिंह तथा व्याघ्र प्रकट हुए, और अन्त में मानो प्रलय-काल आ गया हो, ऐसा गरजता, तरंगायित सागर सम्मुख आ खड़ा हुआ। यह सब वास्तविक नहीं था — यक्ष, जो माया के स्वामी हैं, असावधान को विचलित करने के लिए ठीक ऐसे ही दृश्य रचते हैं — फिर भी क्षणभर के लिए ध्रुव का मन भी इस प्रदर्शन से विभ्रान्त हो उठा (श्लोक 21-29)।

ऋषियों का आशीर्वाद

जैसे-जैसे माया-युद्ध बढ़ा, धर्मियों की रक्षा करने वाले महर्षि ध्रुव को स्थिर करने तथा आशीर्वाद देने प्रकट हुए। उन्होंने उस पर परम भगवान् की रक्षा का आवाहन किया — वे जो शार्ङ्ग धनुष धारण करते हैं और शरणागतों की पीड़ा हरते हैं — और युवा राजा को स्मरण कराया कि भगवान् का नाम मात्र, कहा तथा सुना जाकर, आत्मा को मृत्यु के अपार सागर के पार सुरक्षित ले जाता है।

मुनय ऊचुः

औत्तानपाद भगवांस्तव शार्ङ्गधन्वा

देवः क्षिणोत्ववनतार्तिहरो विपक्षान् ।

यन्नामधेयमभिधाय निशम्य चाद्धा

लोकोऽञ्जसा तरति दुस्तरमङ्ग मृत्युम् ॥ ३० ॥

munaya ūcuḥ auttānapāda bhagavāṁs tava śārṅgadhanvā devaḥ kṣiṇotv avanatārti-haro vipakṣān yan-nāmadheyam abhidhāya niśamya cāddhā loko 'ñjasā tarati dustaram aṅga mṛtyum

अर्थ: ऋषियों ने कहा: हे उत्तानपाद-पुत्र, वे भगवान् जो शार्ङ्ग धनुष धारण करते हैं, शरणागतों की पीड़ा हरने वाले, तेरे शत्रुओं का नाश करें — वे जिनका नाम, एक बार कहे तथा सुने जाने पर, संसार को अपार मृत्यु के पार सहज ही ले जाता है। (स्कन्ध 4, अध्याय 10, श्लोक 30)



जैसे ही यक्ष माया-युद्ध की ओर मुड़ते हैं, महर्षि प्रकट होकर युवा राजा को स्थिर करते हैं, उसे उन परम भगवान् के नाम से आशीर्वाद देते हुए जो आत्मा को मृत्यु के सागर के पार ले जाते हैं (श्लोक 30)।

भगवान् के नाम में आवाहित उस आशीर्वाद के साथ दशम अध्याय समाप्त होता है, इसका युद्ध स्थिर टिका हुआ — और उस हस्तक्षेप का मार्ग खुलता है जो अगला अध्याय लाएगा, जब ध्रुव के पितामह स्वयम्भुव मनु उसे शान्ति की ओर परामर्श देने आते हैं।

इस अध्याय को प्रमुख शिक्षाएँ

1. आशीर्वादित जन भी शोक से मिलते हैं। ध्रुव, जिसने भगवान् को साक्षात् देखा, अपने भाई की मृत्यु के शोक से नहीं बचता। भक्ति हमें हानि से मुक्त नहीं करती; वह उसके भीतर हमें एक आश्रय देती है (श्लोक 3)।
2. शोक तथा क्रोध स्वाभाविक हैं, किन्तु अन्तिम वचन नहीं। ध्रुव का शोक तथा क्रोध बिना छिपाव के कहे गए हैं। अध्याय न तो उसकी भावना की निन्दा करता है और न उसे अन्तिम शिक्षा रहने देता है — क्योंकि ऋषि शीघ्र ही उसकी दृष्टि ऊँची उठा देते हैं (श्लोक 4-6)।
3. दृढ़ता भारी-से-भारी आघात के नीचे भी अटल रहती है। अस्त्रों की वर्षा के नीचे दबा, ध्रुव “वर्षा में पर्वत की भाँति” अविचल रहता है। भगवान् में स्थिर आत्मा उस पर पड़ने वाली वस्तुओं से अभिभूत नहीं होती (श्लोक 13)।
4. माया ही शत्रु का सच्चा अस्त्र है। जब बल विफल होता है, यक्ष छल तथा माया की ओर मुड़ते हैं। वैसे ही अन्तर्जीवन में भी, सूक्ष्मतम आघात खुले प्रहारों के रूप में नहीं, बल्कि भ्रमित करने वाली मायाओं के रूप में आते हैं (श्लोक 26-28)।
5. पवित्र नाम ही सबसे निश्चित रक्षा है। ऋषियों का आशीर्वाद ध्रुव के बल पर नहीं, बल्कि भगवान् के नाम पर टिका है, जो “एक बार कहे तथा सुने जाने पर, आत्मा को मृत्यु के पार ले जाता है।” प्रत्येक युद्ध में हमारा सच्चा आश्रय वही नाम है (श्लोक 30)।

एक भक्तिपूर्ण चिन्तन

यह चौंकाने वाला हो सकता है कि शोक तथा युद्ध से इतना भरा अध्याय ध्रुव के जीवन का हो — जो बाल-भक्ति का ही प्रतीक है। फिर भी भागवत हमसे यह नहीं छिपाता कि जिन्होंने भगवान् को देखा है, उन्हें भी शोक से होकर चलना पड़ता है। ध्रुव एक ही आघात में अपना भाई तथा विमाता खो देता है, और उसकी प्रतिक्रिया हृदय-विदारक रूप से मानवीय है — शोक तथा क्रोध एक साथ उठते हुए, और बल से बात ठीक करने की प्रेरणा। शास्त्र न उसे डाँटता है और न उसके क्रोध का महिमामण्डन करता है; वह बस एक शोकाकुल हृदय का सत्य कहता है, और फिर, कोमलता से, ऋषियों को भेजता है कि उसकी दृष्टि भगवान् की ओर पुनः मोड़ दें। इस सच्चाई में सान्त्वना है। हमारे अपने शोक तथा क्रोध भक्ति-मार्ग से अयोग्यता नहीं हैं; वे ठीक वे स्थान हैं जहाँ हमें नाम की सबसे अधिक आवश्यकता होती है। और ध्रुव को ऋषियों का वचन हमारे लिए भी वचन है: कि भगवान् का नाम, मात्र कहा तथा सुना जाकर, हमें उस पार ले जाता है जिसे हम अपने बल से कभी पार नहीं कर सकते — प्रियजनों की मृत्यु सहित, तथा वे भावना-तूफान भी जो मृत्यु जगाती है।

एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

आज, ऋषियों के आशीर्वाद को अपना बनाएँ। जब भी शोक, क्रोध, या भय की कोई लहर आप में उठे — जैसे ध्रुव में उठी — उसका सामना तुरन्त कार्य करके नहीं, बल्कि रुककर भगवान् के नाम को कहने तथा सुनने से करें — “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय”। यदि सम्भव हो तो उसे स्वर से कहें, ताकि ऋषियों के आशीर्वाद की भाँति वह कहा भी जाए और सुना भी जाए। जब कोई वस्तु आप पर अस्त्रों की वर्षा की भाँति गिरे, तो नाम वह प्रथम ढाल हो जिसे आप थामें। ऐसा करने में आप वही सीखते हैं जो ध्रुव ने रणभूमि पर सीखा — कि स्थिरता संकट पर विजय पाने से नहीं, बल्कि वर्षा में पर्वत की भाँति भगवान् की शरण में खड़े रहने से आती है।

उपसंहार

चतुर्थ स्कन्ध का दशम अध्याय कृपा से शोक की ओर मुड़ता है। ध्रुव का अविवाहित भाई उत्तम हिमालय की एक आखेट-यात्रा में यक्ष के प्रहार से गिर पड़ता है, और उसकी माता सुरुचि भी उसकी खोज में वही अन्त पाती है। शोक तथा क्रोध से बिंधकर, ध्रुव अपने विजयी रथ पर आरूढ़ होकर यक्षों की नगरी अलकापुरी पर चढ़ाई करता है, अपना शंख बजाता है जब तक समस्त नगरी काँप न उठे। एक भीषण युद्ध होता है: एक क्षण अस्त्रों की वर्षा में पर्वत की भाँति दबा, ध्रुव अटल खड़ा रहता है और ऐसे बाण छोड़ता है जो राक्षसों की पंक्तियों को चीर देते हैं। जब यक्ष माया-युद्ध की ओर मुड़ते हैं, महर्षि प्रकट होकर युवा राजा को स्थिर करते हैं, उसे उन भगवान् के नाम से आशीर्वाद देते हुए जो शार्ङ्ग धनुष धारण करते हैं और आत्मा को मृत्यु के सागर के पार ले जाते हैं। इस प्रकार अध्याय अपने युद्ध को स्थिर टिकाए तथा अपने सच्चे आश्रय — पवित्र नाम — को नाम देकर समाप्त होता है, जैसे मनु के आगामी हस्तक्षेप का मार्ग खुलता है।

श्रीमद्भागवतम् का दिव्य ज्ञान हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति को जागृत करे।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।

सन्दर्भ तथा आभार

- मूल संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण (अंग्रेज़ी, पूर्ण), चतुर्थ स्कन्ध, दशम अध्याय।
- शृंखला: श्रीमद्भागवतम् विज़्डम • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन तथा अनुशंसा के अनुसार प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, निष्ठावान् पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी तथा लिप्यन्तरण में दिखाए गए हैं और उनके अर्थ सारांश के रूप में दिए गए हैं। यह किसी एक प्रकाशक के निरन्तर अनुवाद या टीका का पुनरुत्पादन नहीं है। किसी भी प्रकाशक द्वारा किसी सम्बद्धता या समर्थन का दावा नहीं किया गया है।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-4-chapter-10-death-of-uttama-and-dhruvas-march-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज़्डम • कल्कि अवतार इंटरनेशनल • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट